

आचार्यश्री महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति, श्रीडूंगरगढ़ (बीकानेर)

दूरभाष : 01565-224600,224900

ई-मेल : jstsdgh01565@gmail.com

अनासक्त चेतना को विकसित करें - युवाचार्य महाश्रमण

श्रीडूंगरगढ़ 11 जनवरी : तेरापंथ भवन के प्रज्ञा सभागार में धर्म सभा को संबोधित करते हुये युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि आदमी आत्मा का दर्शन करना चाहता है परमात्मा के पद को प्राप्त करना चाहता है। और वैर रहित हो सामाजिक कार्यों को संपादित करते हुये और विभिन्न पदों पर रहते हुये भी अनासक्त रहता है वह परम-पद को प्राप्त कर सकता है। आसक्ति छूटना सरल नहीं है। तेरापंथ के इतिहास में मुनि खेतसीजी का उदाहरण मिलता है। आचार्य पद से उनका नाम हटा देने पर भी वे तटस्थ रहे।

उत्तराध्ययन और गीता के तुलनात्मक विवेचन में उन्होंने कहा कि सभी प्राणियों के साथ मैत्री करो, मैत्री का अर्थ है कि हित का चिंतन करना नवनीत स्वयं के ताप से पिघलता है और संत दूसरों संताप को देखकर पिघल जाते हैं। के तप्त से पिघलते है। पातंजल योग में एक सूत्र आता है। जिस व्यक्ति में अहिंसा प्रतिष्ठित हो जाती है उसकी सन्निधि में आने वाले व्यक्ति भी अहिंसक बन जाता है। तपस्या आत्मा के कल्याण का मार्ग है। सेवा भी तपस्या है। जैन दर्शन में मोक्ष की अवधारणा है कि आत्मा कर्मों को क्षय करके परमात्मा बन जाती है। संवर और निर्जरा इसके साधन है। तपस्या का लक्ष्य मात्र निर्जरा है। उन्होंने मुनि कीर्ति कुमार की संसारपक्षीय दादीजी, झमकू देवी भंसाली के द्वारा 80 वर्ष की अवस्था में मासखमण की तपस्या करने पर उनके जीवन को सबके लिए उदाहरणीय बताया। इस मौके पर कीर्ति कुमार ने अपने विचार व्यक्त किये। झमकू देवी भंसाली के सुपुत्र खूबचंद भंसाली ने अपनी तपस्वी मां के जीवन पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

त्रिदिवसीय पारिवारिक सौहार्द कार्य-शाला प्रारंभ

परिवार समाज की महत्वपूर्ण ईकाई है। सहअस्तित्व का स्वर्णिम आवास स्थल है परिवार। जहां एक दूसरे की श्रेष्ठता को संजोया जाता है। श्रेष्ठ परिवार मिलकर श्रेष्ठ समाज का निर्माण करते है। श्रेष्ठता का एक सूत्र है सौहार्द । परिवार मे जहां सौहार्द, सद्भाव और सामंजस्य की कमी होती है, वहां क्लेश, कटुता के कुटिल कांटे के प्रति क्षण चुभन पैदा करते रहते है। अकेला व्यक्ति क्या कर सकता है ? पैसा कमाना ही महत्वपूर्ण नहीं है। परस्पर सौहार्द और सामंजस्य परिवार में नहीं तब कैसे शांति पूर्ण जीवन जीया जा सकता है। ये विचार प्रेक्षा प्राध्यापक मुनि कि-नलाल ने त्रिदिवसीय पारिवारिक सौहार्द कार्य-शाला मे व्यक्त किए। उन्होंने आगे बताया कि परिवार में सौहार्द के लिए जीवन में मर्यादा का होना आव-यक है। मर्यादा तब ही टिक सकती है। जब सदस्यों में सहन-शीलता होती है। सहन-शीलता को दिमाग के कम्प्यूटर में फीड करना होगा। सहन-शीलता के साथ उदारता को भी जरुरी बताते हुए उन्होंने कहा कि परिवार के सदस्य एक दूसरे की अच्छाई को देखें और व्यक्त करें। परस्पर मां-बाप, सास-ससुर के साथ कृतज्ञता का भाव व्यक्त करें तो परिवार में सौहार्द के सूत्र जुड़ सकते है।

प्रेक्षाध्यान का प्र-निक्षण देते हुए मुनि कि-नलाल ने प्रयोगों से अनुभव कराया कि किस तरह से व्यक्ति तटस्थ और वीतराग रह सकता है। प्रतिक्रिया रहित शांत भाव से कैसे वर्तमान में रहा जा सकता। मुनि हिमांशु कुमार ने सहिष्णुता की अनुप्रेक्षा का कुशलता से अभ्यास कराया। कार्यक्रम को सफल बनाने में तेरापंथ युवक परिशद् और महिला मंडल का सक्रिय सहयोग रहा। आचार्यश्री महाप्रज्ञ व्यवस्था समिति, कार्यक्रम की आयोजक थी।

बीकानेर महापौर ने आचार्य महाप्रज्ञ के दर्शन किये

बीकानेर के महापौर भवानी शंकर शर्मा ने आज तेरापंथ भवन पहुंचकर राष्ट्रसंत आचार्य महाप्रज्ञ के दर्शन कर आशीर्वाद किया। उन्होंने इस मौके पर कहा कि आपके आशीर्वाद को प्राप्त कर अहिंसा व करुणामय समाज की स्थापना कर पाऊंगा। भवानी भाई ने प्रज्ञा सभागार में भाग लिया। जहां युवाचार्य महाश्रमण ने जनता की पवित्र सेवा व मूल्यों के विकास की प्रेरणा दी।

सादर प्रकानार्थ : -

श्री उमे-1 जी सक्सेना
सम्पादक, दैनिक युगपक्ष
बीकानेर

मीडिया संयोजक /सहसंयोजक